National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 632-633

मध्य गंगा घाटी की मध्य पाषाणिक संस्कृति : एक विश्लेषण

गुंजन बैस
प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मध्य पाषाण काल में नदियों तथा झीलों से दूर बसे हुए बहुत कम संख्या में बस्तियाँ मिलती है। स्पष्ट रूप से यहाँ के निवासी पानी की उपयुक्त तथा जलीय स्त्रोत के महत्ता से परिचित थे।[1] बस्तियाँ सामान्यतः छोटे आकार में और लगभग 5 मीटर स्क्वायर में थे। बहुत कम ही बड़ी बस्तियाँ जैसे सरायनाहरराय, महदहा तथा दमदमा देखने को मिलती है। दो पुरास्थलों के मध्य 5 से 10 किमी0 की खाली स्थान होता है।[2]

गंगा घाटी के मध्य पाषाण कालीन पुरास्थलों की सरंचना से स्पष्ट है कि पाषाणकालीन मानव अपेक्षाकृत स्थायी जीवन व्यतीत करते थे। स्त्री पुरूष तथा बच्चें एक साथ रहते थे, जैसे कि किसी आधुनिक गाँव में रहते है।[3] सरायनाहर राय, महदहा तथा दमदमा के उत्खन्न से ज्ञात होता है कि इनके आवास स्थल अपेक्षाकृत अधिक स्थायी तथा बड़े होते थे, जिसमें लगभग 450 से 1000 तक की आबादी रहती रही होगी। मध्य पाषाणिक काल में मानव जनसंख्या में एक नाटकीय उत्थान देखने को मिलता हैं।[4] ऐसा प्रतीत होता है कि पारिवारिक इकाई–माता–पिता तथा बच्चें का गठन हो गया था।[5] इसकी पुष्टि छोटे–छोटे चूल्हों तथा युग्मित शवाधानों से भी होता हैं। युग्मित शवाधानों में स्त्री तथा पुरूष अगल–बगल अथवा ऊपर नीचे दफनाये मिले है। सरांयनाहर राय के पुरूष तथा स्त्रियां देाेना ही अपेक्षाकृत लम्बे कद के थे। पुरूषों की औसत लम्बाई 173.93 सेमी0 से 192.08 सेमी0 थी। स्त्रियों की लम्बाई का औसत 174.84 से 189.68 सेमी0 था।[6]

सराय नाहर राय से पन्द्रह युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है। इस पुरास्थल से बच्चों का कंकाल नहीं मिला है। यद्यपि महदहा से अपरिपक्व कंकाल के साक्ष्य प्राप्त हुए है। लगभग सभी मृतकों की अवस्था सोलह से चौंतीस वर्षो के अन्तर्गत थी। इनकी औसत आयु 23–33 वर्ष थी।[7] सराय नाहर राय, महदहा तथा दमदमा के मानव कंकालों को चिन्हित करते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन जब दूसरे प्राक् ऐतिहासिक दक्षिण एशियाई जनसंख्या से करते है तो पाते है कि संराय नाहराय तथा दमदमा के लोगों ने अपने क्षेत्र में तथा इससे परे अनूकूलन में अधिक योगदान दिया है।[8] सराय नाहरराय से पाये जाने वाले मानव कंकालों को आधुनिक होमोनिड्स के शारीरिक संरचना के समान पाया जाता है क्योकि पश्चिमी भारत में पाये जाने वाले होमोसेपियन्स के शारीरिक बनावट तथा उनकी बौद्धिक क्षमता उनके समानान्तर थी।[9]

मध्य गंगा घाटी में स्थित मध्यपाषाणिक पुरास्थल सराय नाहरराय, महदहा तथा दमदमा से बहुत सी समाधियाँ प्राप्त हुए है। इन समाधियों से मानव के रहन–सहन अन्तिम संस्कार, शवाधान की प्रथा, धार्मिक विश्वास, खान–पान तथा अनेक सामाजिक व्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।[10] मृतकों को साधारणतया निवास स्थल के पास ही जमीन में दफनाए जाते थे। समाधियाँ प्रायः छिछली एवं अण्डाकार बनाई जाती थी। परन्तु एक महदहा तथा दो दमदमा की समाधियों को अपवाद के रूप में लिया जाता है। क्योंकि ये अन्य से भिन्न स्थिति में पाई गई है।[11] विस्तीर्ण शवाधानों का दिक् विन्यास पूर्व पश्चिम अथवा पश्चिम पूर्व दिशा में अधिकांशतः सिर पश्चिम दिशा में मिलता है।[12] समाधियों से प्राप्त अवशेषों में मानव कंकालों की संख्या अधिक है। परन्तु समाधियों में अन्य हड्डियाँ तथा कंकाल भी मिले है। उदाहरण के रूप में लेखहिया से प्राप्त शवाधान में पशुओं की हड्डियाँ मिली है। तथा महदहा व दमदमा से प्राप्त शवाधानों से हड्डियों के आभूषण व तीर के अग्रभाग मिले है।[13] मृतकों के कब्र में प्रायः लघु पाषाण उपकरण पशुओं की हड्डियाँ, आभूषण, गुरिया तथा हड्डी एवं श्रृंग के आभूषण हड्डी के उपकरण आदि भी मिले है।[14] संभवतः ये वस्तुएं इस जीवन से परे जीवन के उपयोग के लिए रखी जाती है। सभी शवाधानों के निर्माण में जो एक रूपता मिलती है। उससे प्रतीत होता है कि इस सम्पूर्ण क्रिया ने धार्मिक अनुष्ठान का रूप धारण कर लिया था। पश्चिम–पूर्व अथवा पूर्व पश्चिम दिशा में शवाधान निश्चित रूप से सूर्योदय तथा सूर्यास्त की दिशा से प्रभावित रहे होगें।[15] सम्भवता सूर्योपासना का प्रारम्भ मध्य पाषाण काल से सम्बन्धित किया जा सकता है।

उत्खननों से प्राप्त गर्तचूल्हें गोलाकार, अण्डाकार तथा अनियमित आकार के है। गर्तचूल्हों का मुँह चौड़ा तथा पेंदी संकरी है, जिनकी ऊपर की माप 1.49 सेमी0 से 72 सेमी0 है तथा पेंदी 1.02 सेमी0 से 45 सेमी0 है। उनकी गहराई 10 सेमी0 से 25 सेमी0 के बीच में है।[16] कतिपय गर्त चूल्हों के भीतरी भाग को लीप पोत कर चिकना बनाया गया था।[17] इन चूल्हों में केवल राख मिली है। कोयले के टुकड़े नहीं मिले हैं यह अनुमान किया गया है कि घास–फूस तथा पत्तियों एवं टहनियों आदि का ईधन के रूप में प्रयोग किया जाता था।

गर्तचूल्हों में हिरण, बारहसिंघा, जंगली सुअर, सांभर, चीतल आदि पशुओं की अधजली हड्डियाँ मिली है। इसके अतिरिक्त कछुआ की खोपड़ी के टुकड़े[18] तथा हाथी की पसली, भैंसे की सींग युक्त पूरा सिर[19] भी प्राप्त हुआ है। पशुओं के अतिरिक्त अनेक पक्षियों तथा मछली आदि की हड्डियाँ भी काफी संख्या में मिली हैं इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि लगभग 90 प्रतिशत पशु अस्थियों का जली अथवा अधजली होना यह घोषित करता है कि मध्यपाषाणकाल के लोग पशुओं का मांस भूनकर खाते थे।

मध्य पाषाण युगीन मानव का जीवन मात्र आखेट पर अवलम्बित नहीं था। विभिन्न पुरास्थलों से सिललोढ़ों की प्राप्ति इसे प्रमाणित करती है। जिस प्रकार से सिल लोढ़े मिले है उनसे स्पष्ट है कि खाद्यानों का महत्व इनके जीवन में विशेष था। विभिन्न गर्त्त चूल्हों से घास के पुरापुष्प पराग के अस्तित्व का पता चलता है। संभवतः सिललोढ़ों पर जंगली घास के दानों को पीस कर भोज्य सामग्री के रूप में उपयोग किया जाने लगा था। पुरापुष्पपराग के विश्लेषण से हरे भरे घास के मैदान के विषय में जानकारी मिलती है।[20] विभिन्न

स्थलों पर कुछ प्लास्टर किये हुए बिना जले गड्ढे मिले हैं जिनका उपयोग सम्भवतः खाद्यानों के संग्रह के लिए किया जाता होगा। कोर्बोनाइज्ड और अत्यधिक कठिनाई से संरक्षित चावल का साक्ष्य दमदमा से प्राप्त हुआ है। यह जंगली प्रजातियों से संबंधित है। इससे प्रमाणित होता है कि दमदमा में मध्य पाषाणिक मानव में जंगली चावल का उत्पादन और दोहन दोनों किया था।[21]

मध्य पाषाण युगीन लोगों में यथेष्ट सौन्दर्यबोध था, जो इनके द्वारा निर्मित आभूषणों व उपकरणों से स्पष्ट होता हैं। कब्रों में श्रृंग आदि के बने हुए आभूषणों के विभिन्न प्रमाण प्राप्त होते हैं। कब्रों में केवल पुरूष ही आभूषण पहने हुए दफनाये मिले हैं।[22]

उपसंहार

इससे हम यह अनुमान कर सकते हैं कि समाज में किसी प्रकार का वर्गीकरण भी प्रारम्भ हो गया था। यह भी सम्भावना हो सकती है कि विशिष्ट वर्गों का विकास इस समय से ही प्रारम्भ हो गया हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, पुरूषोत्तम, 2010 आर्कियोलाजी ऑफ द गंगा प्लान, पृ0 157
2. मिश्रा, वी0एन0, 2001, प्री हिस्टोरिक ह्यूमन क्लोनिशन ऑफ इण्डिया, जर्नल ऑफ बायोसाइंस, 26(4), सप्लीमेन्ट, पृ0 510
3. वर्मा, राधाकान्त, डॉ0 नीरा वर्मा, 2001, पुरातत्व अनुशीलन, इलाहाबाद, पृ0 122
4. मिश्रा, वी0एन0 1966, मेसोलिथिक इण्डिया : हिस्ट्री एण्ड करन्ट स्टेटस ऑफ रिसर्च, इन जी0डी0 अफेन्स, एस0 क्लूयजिव, जे0आर0 लूकान्स एण्ड एम0 तोसी (संपा0), वायोआर्कियोलाजी ऑफ मेसोलिथिक इण्डिया एन इंटीग्रेटेड एप्रोच, क्लोक्यूम XXXIII ऑफ द इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ प्री हिस्टोरिक एण्ड प्रोटोहिस्टोरिक साइंस, फोर्लीए, ए.बी. ए.सी. ओ. डीजोनी. पृ0 321–328
5. वर्मा, राधाकान्त, डॉ0 नीरा वर्मा, 2001 पुरातत्व अनुशीलन, इलाहाबाद, पृ0 95
6. पाण्डे, जय नारायण, 1983, पुरातत्व विमर्श, इलाहाबाद, पृ0 308, सरांय नाहराय से प्राप्त अवशेषों का विवरण
7. सिंह, पुरूषोत्तम, 2010, आर्कियोलाजी ऑफ द गंगा प्लान, पृ0 68
8. केनडी, के0ए0आर0, 2000, गॉड एप्स एण्ड फोसिल मेनः पालियोएन्थ्रोपोलोजी ऑफ साउथ ऐशिया इन अरबन यूनिवार्सिटी ऑफ मांइगेन प्रेस
9. वर्मा, आर0के0 1992, सम इस्पेक्ट्स ऑफ द मेसोलिथिक ऑफ द गंगा वैली, इन राकेश तिवारी (संपा0), आर्कियोलाजी पर्सपेक्टिव ऑफ उत्तर प्रदेश एण्ड फरदर प्रासपेक्ट्स, पार्ट–1 लखनऊ, यू0पी0 स्टेट आर्कियोलाजिकल आर्गेनाइजेशन, पृ0 47–57
10. सिंह, पुरूषोत्तम, 2010, आर्कियोलाजी ऑफ द गंगा प्लान, पृ0 61
11. सिंह, पुरूषोत्तम 2010, आर्कियोलाजी ऑफ द गंगा प्लान, पृ0 61–63
12. पाण्डे, जय नारायण, 1983 पुरातत्व विमर्श, इलाहाबाद, पृ0 132
13. मिश्रा, वी0डी0, 1997, द मिसोलिथिक कल्चर ऑफ द विन्ध्य एण्ड द गंगा वैली विथ स्पेशल रिफरेन्स टू इनवायरमेन्ट एण्ड आर्कियोलॉजी, इन वी0एम0 खन्डूरी एंड विनोद नौटियाल (संपा0), हिम–कान्ती (प्रो0 के0पी0 नौटियाल फ्लेक्चेशन वाल्यूम) दिल्ली बुक इण्डिया पब्लिशिंग को0, पृ0 32–38
14. भट्टाचार्य, डी.के., 1999, भारतीय प्रागैतिहास की रूपरेखा, नई दिल्ली, पृ0 132
15. वर्मा, राधाकान्त, डॉ0 नीरा वर्मा, 2001, पुरातत्व अनुशीलन, इलाहाबाद, पृ0 100
16. पाण्डे, जय नारायण, 1983, पुरातत्व विमर्श, इलाहाबाद, पृ0 309, सरांयनहर राय से प्राप्त अवशेष
17. पाण्डे, जय नारायण, 1983, पुरातत्व विमर्श, इलाहाबाद, पृ0 314, महदहा पुरास्थल से प्राप्त
18. पाण्डे, जय नारायण 1983, पुरातत्व विमर्श, पृ0 309, सरांय नाहर राय
19. पाण्डे, जय नारायण 1983, पुरातत्व विमर्श, पृ0 315 महदहा पुरास्थल से प्राप्त
20. महदहा से पुरापुष्प पराग प्राप्त हुआ था, जिसका प्राथमिक विश्लेषण इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के डी0डी पन्त ने किया था। जय नारायण पाण्डे, पुरातत्व विमर्श, पृ0 310
21. बोस, शिवानी, 2003, फारेस्ट्स एण्ड फील्ड इन द मिडिल गंगेटिक प्लान (फ्राम द मेसोलिथिक अप टू सी थर्ड सेंचरी बी0सी0) एम0 फिल0 डिजरेशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी (अनपब्लिश्ड)
22. वर्मा, राधा कान्त, डॉ0, नीरा वर्मा, 2001 पुरातत्व अनुशीलन, पृ0 120